आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

ICMR INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH Serving the nation since 1911

वर्ष-33, अंक-6 जून, 2019

इस अंक में

- राष्ट्रीय पोषण संस्थान : पोषण के माध्यम से राष्ट्र को सशक्त बनाने के 100 वर्ष–भाग 2 57
- प्रो. बलराम भार्गव, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद एवं उनके दल द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान (एन आई एच), सं. रा. अ. का दौरा 61
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह का आयोजन 63
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 64
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी 65
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के कुछ प्रकाशन 66

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **प्रो. बलराम भार्गव**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

उपाध्यक्ष — **डॉ चन्द्र शेखर,**
डॉ जी.एस. टोटेजा
अपर महानिदेशक

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ नीरज टण्डन**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**

राष्ट्रीय पोषण संस्थान : पोषण के माध्यम से राष्ट्र को सशक्त बनाने के 100 वर्ष–भाग 2

खाद्य सुरक्षा और विषविज्ञान

खाद्य जीवविष (टॉक्सिंस)

खाद्य टॉक्सिंस पर सम्पन्न अध्ययनों में तंत्रिका लेथाइरसरुग्णता, एफ्लाटॉक्सिकोसिस, आर्जीमोन विषाक्तता, ड्रॉप्सी की महामारी और खाद्य तेल में एरूसिक एसिड की विषाक्तता जैसे पहलुओं की जांच की गई। इस संस्थान ने विषाक्त कारकों की प्रकृति की पहचान करने और उनके निवारण एवं नियंत्रण के लिए हल ढूंढने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। वर्ष 1963 में सम्पन्न एक महत्वपूर्ण अध्ययन में बेबी चिक्स में खेसारी दाल (*लेथाइरस सेटाइवस*) के जलीय अल्कोहलिक सत्वों को प्रदान करके तंत्रिका विषाक्तता की स्थिति प्रेरित की गई। विषाक्तता के लिए जिम्मेदार कारक के रूप में बीटा–एन–ऑक्ज़ेलिल अमीनो एलानाइन के नाम से एक असामान्य अमीनो एसिड की पहचान की गई। बाद में घर में अथवा व्यापार स्तर पर खेसारी बीजों को लगभग पकने तक उबालने के बाद तैयार दालों को पकाने पर इसकी विषाक्तता में कमी प्रदर्शित की गई। यह अध्ययन इस संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में एक है।

ड्रॉप्सी की महामारी पर अध्ययन

वर्ष 1998 में पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, मध्य प्रदेश, हरियाणा, असम, जम्मू और कश्मीर, उत्तर प्रदेश, गुजरात, दिल्ली और महाराष्ट्र जैसे अनेक राज्यों में ड्रॉप्सी की महामारी प्रकाश में आई, जिसकी घटना मुख्यतया आर्जीमोन के तेल से मिश्रित सरसों के तेल में पकाए गए भोजन का सेवन करने के कारण घटी थी। राष्ट्रीय पोषण संस्थान ने मध्य प्रदेश के उन क्षेत्रों में अध्ययन किया जहां ड्रॉप्सी की व्यापकता थी, और सरकार को ऐसे मिलावटी तेल के अनाधिकृत उपयोग को बन्द करने की सिफ़ारिश की। निवारक उपायों के रूप में पीली सरसों की खेती केवल आवश्यकतानुसार करने, नियमों का कड़ाई से अनुपालन करने और मिलावट करने वाले व्यापारियों को कठोरतम् सजा देने जैसे कदम उठाए गए।

खाद्य सुरक्षा पर जानकारी, मनोवृत्ति, मान्यता और व्यवहार संबंधी अध्ययन

खाद्य एवं औषध विषाक्तता अनुसंधान केन्द्र (उस समय राष्ट्रीय पोषण संस्थान में एक पृथक केन्द्र था) द्वारा वर्ष 2005–06 के दौरान खाद्य सुरक्षा पर लोगों की जानकारी, मनोवृत्ति, मान्यता और व्यवहार पर एक अध्ययन किया गया। ये अध्ययन देश के 28 राज्यों में परिवार के सदस्यों के साथ–साथ चिकित्सकों, नियामकों और शिक्षकों पर किए गए।

प्री–क्लिनिकल टॉक्सिकोलॉजी

राष्ट्रीय पोषण संस्थान में वर्ष 1999 में एक प्रीक्लिनिकल टॉक्सिकोलॉजी सेंटर (पी सी टी) की स्थापना की गई। इस केन्द्र द्वारा चिकित्सीय परीक्षणों में प्रयुक्त उत्पादों को प्रयोग करने से पूर्व उसकी विषाक्तता ज्ञात करने के लिए अध्ययन किए जाते हैं। इस केन्द्र द्वारा अब तक रीकॉम्बीनैंट उत्पादों (एंटी–रेबीज़ वैक्सीन, इंटरफेरॉन, टेट्रावैलेंट वैक्सीन और एच पी वी मुखीय वैक्सीन), स्वदेशी विकसित पेप्टाइड्स की जांच की गई और यह केन्द्र भस्म (हर्बल, आयुर्वेदिक उत्पाद) और खाद्य योज्य (फूड एडिटिव) जैसे पारम्परिक उत्पादों के निर्माण से भी संबद्ध है। पी सी टी द्वारा जांच किए गए लगभग 80 प्रतिशत उत्पादों के चिकित्सीय परीक्षण किए जा रहे हैं और कुछ उत्पाद चिकित्सा में प्रयोग किए जा रहे हैं।

प्रथम एशियन पोषण कांग्रेस के अवसर पर मंचासीन सम्मानित अतिथिगण की उपस्थिति में राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के तत्कालीन निदेशक डॉ सी. गोपालन सम्बोधित करते हुए।

असंचारी रोग

असंचारी रोगों की व्यापकता पर आंकड़े

अभी हाल ही में, वर्ष 2017 में राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा भारत के 16 राज्यों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अतिभार/स्थूलता तथा असंचारी रोगों की व्यापकता पर आंकड़े तैयार किए गए। केवल शहरी सर्वेक्षण में 16 राज्यों के 1097 वार्ड्स के 52,500 परिवारों से 1,71,928 व्यक्तियों से जानकारी प्राप्त की गई।

मधुमेह के प्रबंधन में मेथी के दाने

यह पाया गया कि मेथी के दानों (बीजों) से ग्लूकोज़ की सह्यता बेहतर हुई तथा टाइप 2 मधुमेह के अन्य लक्षणों में सुधार आ गया। रिपोर्ट के अनुसार मधुमेह की स्थिति में ग्लूकोज़ की सह्यता को बेहतर बनाने के लिए मेथी के दानों की कार्य प्रक्रिया के पीछे कोशिकीय स्तर पर ग्लूकोज़ के उपयोग में सुधार होने की स्थिति जिम्मेदार होती है।

खाद्य तेलों पर अनुसंधान

वर्ष 1980 के दशक में भारत में खाद्य तेलों का उत्पादन घट गया था, उस दौरान भारत सरकार का ध्यानाकर्षण गैरपरम्परागत खाद्य तेलों की ओर गया। इस क्रम में राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा राइसब्रान ऑयल, मैंगो केर्नेल ऑयल, पाम ऑयल, नीम तेल, तुम्बा ऑयल और क्रूड पाम ऑयल जैसे गैरपरम्परागत खाद्य तेलों की पोषणज गुणवत्ता और सुरक्षा के मूल्यांकन हेतु क्रमबद्ध अध्ययन किए गए।

कई तेलों के प्रयोग की सिफ़ारिश

प्लाज़्मा प्रोफाइल के नियमन में n-3 और n-6 पॉलीअनसैचुरेटेड फैटी एसिट्स (PUFAs) की तुलनात्मक भूमिका का अध्ययन किया गया। साथ ही यह ज्ञात किया गया कि भारतीय आहारों में इन फैटी एसिड्स का अनुपात कितना होना चाहिए। इन अध्ययनों के आधार पर विभिन्न तेलों में मौजूद n-3 और n-6 फैटी एसिड्स से लाभान्वित होने के लिए तेलों को मिलाकर अथवा संयोजन में प्रयोग करने की सिफ़ारिश की गई। विभिन्न सामाजिक–आर्थिक वर्गों द्वारा अलग–अलग मात्रा में तरह–तरह के तेलों का सेवन किया गया, जिसके परिणामस्वरूप पोषण के संदर्भ में n-6 PUFA का स्तर उत्तम पाया गया, जबकि n-3 PUFA के स्तर में सुधार की आवश्यकता थी। अध्ययनों में लम्बी अवधि तक मिला–मिला कर प्रयुक्त खाद्य तेलों के सेवन के परिणामस्वरूप n-3 PUFA के स्तर में सुधार देखा गया। इन अध्ययनों के उपरांत राष्ट्रीय पोषण संस्थान ने एक से अधिक तेलों के प्रयोग की सिफारिश की।

राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर मंचासीन सम्मानित अतिथिगण एवं अधिकारियों की उपस्थिति में आंध्र प्रदेश के तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री श्री के. ब्रह्मानन्द रेड्डी सम्बोधित करते हुए।

स्वास्थ्य पर ट्रांस वसा के प्रभाव

आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा सम्पन्न एक अध्ययन में आंशिक रूप से हाइड्रोजिनेटेड वनस्पति (वेजीटेबल ऑयल) के सेवन से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात किया गया। मिले परिणामों से पता चला कि संतृप्त तेलों की तुलना में *वनस्पति घी* में मौजूद ट्रांस फैट्स के कारण इंसुलिन की सुग्राह्यता काफी हद तक घट जाती है। इसके हानिकारक प्रभावों को देखते हुए भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण

(एफ एस एस ए आई) ने *वनस्पति घी* में ट्रांस फैटी एसिड की मात्रा अधिकतम 10 प्रतिशत तक निर्धारित की और आगामी वर्षों में इसे घटाकर 5 प्रतिशत और 2 प्रतिशत तक करने की सिफारिश की गई है।

भारतीय मसालों में कैंसर रोधी गुणों पर अध्ययन

पोषण और कैंसर पर सम्पन्न अध्ययनों से जठरांत्रीय पथ में कैंसर के प्रति सुग्राह्यता अथवा इसे रोकने में सूक्ष्मपोषक तत्वों की भूमिका ज्ञात हुई। अध्ययनों में देखा गया कि कैंसर रोगियों में विटामिन ए, राइबोफ्लैविन, फोलेट और सेलीनियम के स्तर निम्न थे। हल्दी और अदरक जैसे भारतीय मसालों पर सम्पन्न अध्ययनों में उनमें कैंसर रोधी गुण पाए गए। हल्दी, अदरक और लहसुन में उत्परिवर्तन–उत्प्रेरक रोधी गुणों की भी खोज की गई है।

आउटरीच और मानव संसाधन विकास

राष्ट्रीय पोषण संस्थान में वर्ष 1960 के दशक में विस्तार एवं प्रशिक्षण प्रभाग की स्थापना की गई थी। इस प्रभाग द्वारा विभिन्न श्रेणी के कर्मियों के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। अनेक वैज्ञानिक, अर्ध–वैज्ञानिक और लोकप्रिय प्रकाशन प्रकाशित किए गए हैं तथा राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा सम्पन्न शोध के परिणामों को प्रसारित करने के उद्देश्य से जनसामान्य के लिए उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, पोषण, शिक्षा और संचार शोध द्वारा विभिन्न वर्ग के जन समूहों में पोषण संबंधी संदेशों को पहुंचाने के लिए लोक कलाओं, क्लास रूम में शिक्षण तथा कंप्यूटर आधारित शिक्षण सहित विभिन्न विधियों और मीडिया की उपयोगिता स्थापित की गई है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम/पाठ्यक्रम

मेडिकल कॉलेज के फैकल्टी सदस्यों और सार्वजनिक स्वास्थ्य कर्मियों के लिए दो सुव्यवस्थित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की शुरुआत की गई जिनका उद्देश्य सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए पोषण विज्ञान की नवीनतम धारणाओं और उनके प्रयोग के संबंध में प्रशिक्षण देना है। प्रथम एक 12 सप्ताह का *पोस्ट ग्रेजुएट सर्टिफिकेट* पाठ्यक्रम था जिसकी शुरुआत वर्ष 1963 में की गई थी, और दूसरा एक 9 माह का एम. एससी. *(एप्लाइड न्यूट्रीशन)* स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम, जिसकी शुरुआत वर्ष 1968 में की गई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ तथा खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ) जैसी संस्थाओं ने इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए कई अभ्यर्थियों को प्रायोजित किया। एम एससी. (एप्लाइड न्युट्रीशन) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को वर्ष 2004 में बन्द कर दिया गया, और उसके स्थान पर वर्ष 2009 में एक दो–वर्षीय मास्टर्स कार्यक्रम की शुरुआत की गई, यह पाठ्यक्रम विजयवाड़ा स्थित डॉ एन टी आर स्वास्थ्यविज्ञान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हुआ, उसके पश्चात तेलंगाना राज्य में वारंगल स्थित डॉ कालोजी नारायण राव स्वास्थ्यविज्ञान विश्वविद्यालय में स्थानांतरित किया गया। वर्ष 2018 में युवा मामले एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से 'खेल पोषण' में एक एम एससी. कार्यक्रम की शुरुआत की गई है।

पोषण संबंधी प्रचार–प्रसार के लिए सूचना संचार प्रौद्योगिकियां

राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के माध्यम से पोषण संबंधी संदेशों का जन सामान्य तक पहुंचाने की शुरुआत की गई। भारतीयों के लिए आहारीय दिशानिर्देशों, संस्तुत आहारीय मानों *(रेकमेण्डेड डाइटरी एलाउंसेज़)* पर *मोबाइल ऐप्स* तैयार किए गए और उन्हें मुफ्त में डाउनलोड करने तथा प्रयोग में लाने के लिए *पब्लिक डूमेन* में उपलब्ध कराया गया है। वर्ष 2018 में आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा विकसित *न्यूट्रीफाई इंडिया नाउ* (*एन आई एन ऐप*) नामक एक *मोबाइल ऐप* की शुरुआत की गई, जो प्रयोगकर्ताओं को भोजन से प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों और ऊर्जा संतुलन संबंधी जानकारी प्रदान करने में सहायक है। इस ऐप में 17 भारतीय भाषाओं में जानकारी प्रदान की गई है।

भारत में फूड लेबेल पर व्यक्त सूचनाओं का मूल्यांकन

आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा सम्पन्न अध्ययनों में भारत में पहली बार उपभोक्ताओं द्वारा फूड लेबेल्स के प्रयोग का मूल्यांकन किया गया। इन अध्ययनों से पता चला कि शिक्षित उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न खाद्यों के पैक्स पर अंकित लेबेल में प्रस्तुत जानकारी पढ़ी जाती थी।

दृष्टि बाधित व्यक्तियों के लिए जानकारी प्रदान करना

आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा प्रकाशित तीन लोकप्रिय प्रकाशनों यथा–*'डाइटरी गाइडलाइंस फॉर इंडियंस', 'डाइट ऐण्ड डाइबिटीज़'* तथा *'डाइट ऐण्ड हार्ट डिसीज़ेज'* को ब्रेल फॉर्मेट में तैयार किया गया जो दृष्टि बाधित व्यक्तियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। ये पुस्तकें दृष्टि बाधित व्यक्तियों और देश भर में ऐसे छात्रों को शिक्षण–प्रशिक्षण देने से जुड़े संस्थानों को निःशुल्क उपलब्ध करायी गईं।

आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां

दोहरा पुष्टीकृत नमक (डी एफ एस)

राष्ट्रीय पोषण संस्थान के शोध प्रयास आयोडीन अल्पता विकार और लौह अल्पता एनीमिया दोनों का मुकाबला करने के लिए नमक को आयोडीन एवं लौह दोनों के साथ अर्थात दोहरा पुष्टीकृत करने के लिए एक प्रौद्योगिकी विकसित करने पर केन्द्रित रहे। इस प्रौद्योगिकी में ऐसे नमक के भण्डारण पर आयोडीन के स्थायित्व तथा आहार के साथ प्रयोग करने पर दोनों सूक्ष्मपोषक तत्वों की जैवउपलब्धता, आदि की जांच की गई। वर्ष 1990 के दशक के उत्तरार्द्ध में दोहरे पुष्टीकृत नमक *(डबल फोर्टीफाइड सॉल्ट)* की स्वीकार्यता को ज्ञात करने के लिए समुदाय में परीक्षण किए गए। आयोडीन अल्पता विकारों और लौह अल्पता अरक्तता (एनीमिया) विकारों को कम करने में दोहरे पुष्टीकृत नमक के स्थायित्व, प्रभाव तथा उसकी सुरक्षा को ज्ञात करने के लिए आंध्र–प्रदेश की रम्पचॉडवरम जनजातियों में एक यादृच्छिक क्लिनिकल परीक्षण

किया गया। उस क्षेत्र में ये दोनों समस्याएं बहुत अधिक थीं। इस अध्ययन से आयोडीन अल्पता विकारों में काफी गिरावट तथा अरक्तता में एक औसत गिरावट देखी गई।

दिनांक 16 दिसम्बर, 2010 को भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम राष्ट्रीय पोषण संस्थान में भारतीय फार्मेकोलॉजिकल सोसायटी के 43वें वार्षिक सम्मेलन का समापण भाषण देते हुए।

दोहरे पुष्टीकृत नमक की प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण

दोहरे पुष्टीकृत नमक तथा गेहूं के आटे के साथ लौह और अन्य पोषक तत्वों जैसे कि विटामिन ए एवं फोलिक एसिड के पुष्टीकरण की प्रौद्योगिकियां उद्योग को हस्तांतरित की गईं। राष्ट्रीय पोषण संस्थान ने दोहरे पुष्टीकृत नमक के लिए एफ एस एस ए आई हेतु नियामक विषयों को तैयार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 2011 में सरकार ने एकीकृत शिशु विकास योजना (आई सी डी एस), मध्यान्ह भोजन (मिड डे मील) और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पी डी एस) में दोहरे पुष्टीकृत नमक को उपलब्ध कराने, तथा इसके प्रयोग को बढ़ावा देने पर सूचना, शिक्षण और संचार के माध्यम से जागरूकता फैलाने के लिए निर्देश दिए।

विटामिन ए के आमापन हेतु ड्राइड ब्लड स्पॉट (डी बी एस) सुविधा

आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान ने मानव सीरम में रेटिनॉल, जो विटामिन ए के स्तर को ज्ञात करने का एक चिन्हक है, की मात्रा ज्ञात करने के लिए एक *ड्राइड ब्लड स्पॉट* (डी बी एस) विधि विकसित और वैधीकृत की है। इसके लिए संयुक्त राज्य अमरीका की क्राफ्ट टेक्नोलॉज़ीज़ से तकनीकी सहायता प्राप्त की गई। इसके अतिरिक्त, अंतः पात्र स्थिति में लौह, ज़िंक और कैरोटिनॉयड्स की जैवउपलब्धता की जांच विधियां स्थापित की गईं। ये विधियां पब्लिक–प्राइवेट भागीदारी कार्यक्रमों के अन्तर्गत पुष्टीकृत खाद्यों (फोर्टीफाइड फूड्स) और पेय पदार्थों की प्रभावकारिता की जांच करने में व्यापक रूप से प्रयोग की गईं। वर्ष 2006 में राष्ट्रीय पोषण संस्थान में सूक्ष्मपोषक तत्वों के आमापन हेतु एक राष्ट्रीय डी बी एस आमापन सुविधा स्थापित की गई।

सीरम फेरीटिन की माप हेतु एलाइज़ा नैदानिक किट

इस किट में सीरम में फेरीटिन की जांच करने के लिए एलाइज़ा विधि प्रयोग की जाती है जो उपलब्ध अन्य प्रौद्योगिकियों की तुलना में सही परिणाम देने वाली, सुविधाजनक और किफ़ायती है। इस किट के माध्यम से शरीर में लौह की कमी की सटीक जांच की जाती है। इस विधि द्वारा लौह पुष्टीकरण खाद्यों में लौह की जैवउपलब्धता की भी जांच की जा सकती है।

भविष्य की ओर प्रगतिशील

गौरवमयी सौ वर्ष पूर्ण होने पर, भारत में स्वास्थ्य एवं पोषण की वर्तमान स्थिति में, कुपोषण के दोहरी/तिहरी समस्या की उपस्थिति में राष्ट्रीय पोषण संस्थान ने अपने प्रयासों को न केवल पोषण विज्ञान बल्कि एक स्वस्थ राष्ट्र के प्रति नवीन प्रतिबद्वता के साथ पुनर्केन्द्रित किया है। यह संस्थान सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय पोषण मिशन और राष्ट्रीय पोषण नीति के अनुरूप मौलिक, क्लिनिकल और समुदाय आधारित प्रयासों से प्राप्त परिणामों को समुदाय तक पहुंचाने के उद्देश्य से विविध क्षेत्रों में अपने शोध कार्यक्रमों को तीव्रता के साथ संचारित करेगा।

मातृ, शिशु और किशोरवय स्वास्थ्य

सभी विकासशील देशों और कुपोषण की व्यापक उपस्थिति वाले देशों में शिशु को प्रथम 1000 दिनों तक पोषण प्रदान करना महत्वपूर्ण होता है। राष्ट्रीय पोषण संस्थान अपने शोध प्रयासों को न केवल 1000 दिनों तक बल्कि पीढ़ियों के बीच कुपोषण के चक्र को तोड़ने के लिए सगर्भता से पूर्व भी पोषण पर केन्द्रित करेगा। इस दिशा में इस संस्थान के शोध कार्य एक लघुकालिक नीति के रूप में कम भार सहित शिशु जन्म और बौनेपन की घटनाओं को कम करने के लिए सगर्भता, दुग्ध स्रवण तथा शिशु एवं छोटे बच्चों को दुग्धपान कराने के दौरान, एवं सगर्भता के दौरान पोषण की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए एक दीर्घकालिक नीति के रूप में युवावर्ग की लड़कियों के पोषण पर केन्द्रित किए जाएंगे। इस प्रयास से प्रारंभिक जीवन काल में पोषण की कमी के कारण युवा वर्ग में कोरोनरी हृदय रोग और/अथवा टाइप-2 मधुमेह की घटनाओं को कम करने के तरीकों एवं साधनों का पता लगाने में भी मदद मिलेगी।

वृद्धावस्था संबद्ध पोषण

यद्यपि, विश्व की युवा और प्रजननशील आबादी का 5वां हिस्सा भारत में है परन्तु वृद्धों की तेजी से बढ़ती आबादी के कारण पोषण के संबंध में बढ़ती समस्याओं को नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। यह संस्थान अपने शोध प्रयास वृद्धावस्था में मुख्यतया मनोभ्रंश (डीमेंशिया), अल्ज़ाइमर रोग, आदि पर आहारीय सेवन के प्रभावों को ज्ञात करते हुए सूक्ष्मपोषक तत्वों की कमी की स्थिति का निर्धारण करने की दिशा में भी कार्य करेगा।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्रचार–प्रसार

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के अंतर्गत पोषण, खाद्य सुरक्षा तथा स्वास्थ्य संदेशों के लिए मोबाइल ऐप्स के प्रयोग को

प्रमुख प्राथमिकता दी जा रही है। राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा लोगों को देश के आर्थिक, सामाजिक एवं क्षेत्रीय पहलुओं पर समर्थ बनाने के लिए भी *ई–लर्निंग* साधन विकसित किए जा रहे हैं। यह संस्थान भारत सरकार के महिला एवं शिशु विकास मंत्रालय द्वारा समर्पित इस पहल के लिए एक नोडल हब के रूप में कार्य करेगा।

सरलता के साथ प्रयोग हेतु संकेतक

परिवार के स्तर पर आहार विविधता, खाद्य सुरक्षा, तथा किशोरावय के स्वस्थ भोजन एवं जीवन जैसे पहलुओं का मूल्यांकन करने के लिए सरल संकेतकों को विकसित करने पर भी अध्ययन किए जा रहे हैं।

आहारीय रेफरेंस अन्तर्ग्रहण

इस संस्थान द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों से स्वस्थ भारतीय आबादी द्वारा पर्याप्त मात्रा में भोजन करने पर आंकड़े एकत्र करने तथा उनकी शारीरिक माप, शरीर संघटन और उनके सूक्ष्मपोषक तत्वों की स्थिति पर भी आंकड़े एकत्र करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। संस्तुत आहारीय मानों तथा पोषक तत्वों की अधिकतम सह्य सीमाओं पर किए जा रहे अध्ययनों के साथ इस अध्ययन के परिणामस्वरूप भारतीयों के लिए आहारीय अंतर्ग्रहण पर जानकारी प्राप्त की जा सकेगी।

भारतीय पोषण रिपोर्ट

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एन एफ एच एस), राष्ट्रीय सैम्पल सर्वेक्षण संगठन (एन एस एस ओ) और राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्यूरो (एन एन एम बी) जैसी एजेंसियों द्वारा समय–समय पर सम्पन्न सर्वेक्षणों के माध्यम से देश भर में स्वास्थ्य और पोषण के संबंध में एकत्रित आंकड़ों के अनेक बड़े डाटासेट उपलब्ध हैं। उन्नत सांख्यिकीय विधियों की सहायता से इन आंकड़ों का विस्तृत विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा भारत पोषण रिपोर्ट के अन्तर्गत बालकालीन कुपोषण और असंचारी रोगों पर विशेष रूप से केन्द्रित, स्वास्थ्य और पोषण को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों के बीच जटिल संबंधों को ज्ञात करने के लिए इन सभी आंकड़ों का बृहत विश्लेषण किया जाएगा।

निष्कर्ष

एक शताब्दी की अवधि के दौरान आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान के शोध कार्य समय–समय पर देश में पोषण के संबंध में व्याप्त प्रमुख समस्याओं को ज्ञात करने तथा उन समस्याओं को दूर करने हेतु व्यावहारिक समाधान खोजने पर संकेन्द्रित रहे हैं। देश में पोषण अनुसंधान के क्षेत्र में राष्ट्रीय पोषण संस्थान की सदैव एक अग्रणी भूमिका रही है। शताब्दी वर्ष के दौरान, आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान पोषण के माध्यम से देश को सशक्त बनाते हुए लोगों के कल्याण में अपने योगदान के प्रति पुनः प्रतिबद्ध है।

यह आलेख भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* के नवम्बर, 2018 अंक में *'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रीशन : 100 इयर्स ऑफ एम्पावरिंग दि नेशन थ्रू न्यूट्रीशन'* शीर्षक से प्रकाशित समीक्षा लेख पर आधारित है।
सभी चित्र......... साभार, आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद।

प्रो. बलराम भार्गव, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद एवं उनके दल द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान (एन आई एच), सं. रा. अ. का दौरा

प्रो. बलराम भार्गव, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद एवं उनके दल ने दिनांक 17–21 जून, 2019 के दौरान संयुक्त राज्य अमरीका में मैरीलैण्ड, बेथेस्डा स्थित राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान (*नेशनल इंस्टीट्यूट्स ऑफ हेल्थ*, एन आई एच के नाम से विख्यात) का दौरा किया और श्रृंखलाबद्ध बैठकों में हिस्सा लिया। प्रो. भार्गव के दल के साथ दौरा करने वाले वैज्ञानिकों में सम्मिलित थे– प्रो. निखिल टण्डन, विभागाध्यक्ष, अंतःस्रावीविज्ञान विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली; डॉ आर. आर. गंगाखेडकर, वैज्ञानिक 'जी' एवं अध्यक्ष, जानपदिक रोगविज्ञान एवं संचारी रोग प्रभाग; डॉ मुकेश कुमार, वैज्ञानिक 'जी' एवं अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रभाग, डॉ आर. एस. धालीवाल, वैज्ञानिक 'जी' एवं

फोगार्टी इंटरनेशनल सेंटर (एफ आई सी–एन आई एच) के वैज्ञानिकों के साथ प्रो. बलराम भार्गव, सचिव, स्वा. अ. वि. तथा महानिदेशक, आई सी एम आर (दाएं से चौथे), एवं उनके दल के वैज्ञानिकगण।

प्रो. बलराम भार्गव (दाएं से चतुर्थ) एवं उनके दल के सदस्यगण डॉ एंथनी एस. फाउसी, निदेशक, *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एलर्जी ऐण्ड इंफेक्शियस डिसीज़ेंज* (एन आई ए आई डी–एन आई एच) के साथ।

अध्यक्ष, असंचारी रोग प्रभाग; डॉ हरप्रीत संधू, वैज्ञानिक 'एफ'; डॉ तनवीर कौर, वैज्ञानिक 'एफ'; तथा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद में नेशनल चेयर (क्लीनिकल फार्मेकोलॉजी) डॉ नीलिमा क्षीरसागर।

प्रो. भार्गव और उनके दल ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण बैठकों में हिस्सा लिया :

- *इंटरनेशनल (बायोमेडिकल) रिसर्च आर्गनाइज़ेशंस* (HIROs) के अध्यक्षों के साथ वार्षिक बैठक तथा *ग्लोबल एलाएंस ऑफ क्रॉनिक डिसीज़ेज* (GAcD) के *स्ट्रेटजी बोर्ड* की बैठक।
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान के *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डायबिटीज़ ऐण्ड डाइजेस्टिव किडनी डिसीज़ेंज* (एन आई डी डी के–एन आई एच) में मधुमेह अनुसंधान पर भारत–अमरीका संयुक्त संचालन समिति की बैठक।
- *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजिंग* (एन आई ए–एन आई एच) में *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एलर्जी ऐण्ड इनफेक्शियस डिसीज़ेज* (एन आई ए आई डी–एन आई एच) के निदेशक डॉ एंथनी एस. फाउसी के साथ चर्चा बैठक।
- *नेशनल सेंटर फॉर कॉम्पलीमेंटरी ऐण्ड इंटीग्रेटिव हेल्थ* (एन सी सी आई एच–एन आई एच) में पादप–भेषजगुणविज्ञान तथा वैकल्पिक औषधियों एवं व्यवहार पर चर्चा बैठक।
- *फोगार्टी इंटरनेशनल सेंटर* (एफ आई सी–एन आई एच) में बैठक।
- *नेशनल सेंटर फॉर एडवांसिंग ट्रांसलेशनल साइंसेज़* (एन सी ए टी एस–एन आई एच) में ट्रांसलेशनल अनुसंधान, औषध खोज, नवोन्मेषी कार्यान्वयन तथा ट्रांसलेशनल व्यवहारों पर चर्चा बैठक।
- *नेशनल इंस्टीट्यूट्स ऑफ हेल्थ* (एन आई एच) के निदेशक डॉ फ्रांसिस कॉलिंस के साथ बैठक।
- *नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट* (एन सी आई–एन आई एच) में *कैंसर रिसर्च कंशोर्शियम ऐण्ड लार्ज स्केल लांगीट्युडिनल कोहोर्ट्स* पर चर्चा बैठक।
- *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ* (एन आई एम एच–एन आई एच) में आत्मघात एवं व्यवहारात्मक खतरों पर चर्चा बैठक।
- *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोलॉजिकल डिसआर्डर्स ऐण्ड स्ट्रोक* (एन आई एन डी एस–एन आई एच) में ट्रामा, दुर्घटनाओं तथा मस्तिष्क चोट पर चर्चा बैठक।
- *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडिकल इमेजिंग ऐण्ड बायोइंजीनियरिंग* (एन आई बी आई बी–एन आई एच) में बायोइंजीनियरिंग, पी ओ सी नैदानिकी तथा डिजिटल स्वास्थ्य एवं आर्टीफीसियल इंटेलीजेंस (ए आई) पर चर्चा बैठक।

प्रो. बलराम भार्गव (बाएं से चतुर्थ) अपने दल के साथ संयुक्त राज्य अमरीका में बेथेस्डा स्थित राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान (एन आई एच) में, बाएं से डॉ मुकेश कुमार, डॉ आर. एस. धालीवाल, डॉ तनवीर कौर, प्रो. भार्गव, प्रो. निखिल टण्डन, डॉ हरप्रीत संधू, और डॉ नीलिमा क्षीरसागर।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह का आयोजन

नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में दिनांक 21 जून, 2019 को '5वें विश्व अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' समारोह का आयोजन किया गया। प्रातः 7.15 बजे आई सी एम आर मुख्यालय के प्रांगण में योग प्रशिक्षक सुश्री मंजूषा और उनके सहयोगी के निर्देशन में योगाभ्यास का आयोजन किया गया। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अपर महानिदेशक डॉ चन्द्र शेखर, वरिष्ठ वित्तीय सलाहकार श्री राजीव रॉय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की संयुक्त सचिव श्रीमती अनु नागर तथा आई सी एम आर के अनेक वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस योगाभ्यास कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें विभिन्न प्रकार के आसनों का अभ्यास किया गया।

योगाभ्यास कार्यक्रम के उपरान्त आई सी एम आर मुख्यालय के सभागार में योग और स्वास्थ्य पर एक व्याख्यान का आयोजन किया। नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के *कार्डियक एनीस्थीसिया* विभाग की प्रोफेसर मिनाती चौधरी ने हृदयरोग ग्रस्त रोगियों में शल्यक्रिया के पश्चात योगाभ्यास के लाभकारी प्रभावों के विषय पर एक अत्यन्त रोचक एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। आई सी एम आर मुख्यालय की वैज्ञानिक 'ई' डॉ नीता कुमार ने व्याख्याता का परिचय दिया तथा वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) डॉ जी.एस.जी. अयंगर ने व्याख्याता का स्वागत करते हुए हमारे दैनिक जीवन में स्वस्थ बने रहने में योगाभ्यास को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बताया कि भारत के प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी ने योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने और विश्व भर में दिनांक 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाए जाने के लिए अभूतपूर्व योगदान दिया है जो प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व की बात है।

5वें विश्व योग दिवस के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय प्रांगण में आयोजित योगाभ्यास के दृश्य।

डॉ चौधरी ने हृद्शल्यचिकित्सा के उपरांत रोगियों में तंत्रिका. अंतःस्रावी, चयापचय, प्रतिरक्षा और रुधिर से संबंधित स्थितियों में योग और मनन को अत्यन्त लाभदायक बताया। उन्होंने बताया कि शल्यक्रिया का लाभ प्राप्त करने वाले हृद्रोगियों में मनन (मेडीटेशन) के परिणामस्वरूप चिन्ता और तनाव के स्तर बहुत कम पाए गए। डॉ चौधरी ने बल दिया कि शल्यक्रिया के उपरांत हृदयरोगियों द्वारा योगाभ्यास चिकित्सक की सलाह में ही किया जाना चाहिए।

आई सी एम आर मुख्यालय के सभागार में डॉ मिनाती चौधरी द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान का दृश्य।

सभागार में योग से संबंधित विभिन्न आसनों से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों पर एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, पूछे गए प्रत्येक प्रश्न का सही उत्तर देने पर पुरस्कार स्वरूप 100 रुपए की धनराशि प्रदान की गई। सभागार में बड़ी संख्या में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति रही। डॉ नीता कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के उपरांत इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

आर बी एम सी एच प्रभाग के अन्तर्गत तकनीकी एवं विशेषज्ञ समिति की बैठक	3 एवं 6 जून, 2019
राष्ट्रीय हृदयाघात पंजीकरण केन्द्र के संबंध में बैठक	3 एवं 4 जून, 2019
मेनिंजाइटिस की निगरानी पर बैठक	4 जून, 2019
खाद्य जनित पैथोजन (रोगजन) की जांच की शुरुआत करने हेतु ब्रेनस्टॉर्मिंग बैठक	4 जून, 2019
ई सी डी प्रभाग के अन्तर्गत विशेषज्ञ समूह की बैठक	4 जून, 2019
सोलर पैनेल्स के लिए स्पेसीफिकेशन समिति की बैठक	6 जून, 2019
बीटा ह्युमन क्रोनिक गोन्डोट्रापिन (hCG) परियोजना पर बैठक	10 जून, 2019
आयोडीन अल्पता विकार पर टास्क फोर्स अध्ययन से संबंधित बैठक	10 जून, 2019
इनीशिएटिव फॉर न्यू ड्रग पर बैठक	10 जून, 2019
आर बी एम सी एच प्रभाग के अंतर्गत स्टैण्डर्ड ट्रीटमेंट वर्कफ्लो पर बैठक	11 जून, 2019
डेंगी वैक्सीन पर बैठक	11 जून, 2019
स्वास्थ्य मंत्रालय की जांच समिति की बैठक	11 जून, 2019
एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध के अभिसरण (कंवर्जेंस) पर बैठक	12 जून, 2019
जीन थिरैपी हेतु दिशानिर्देश तैयार करने के लिए ड्राफ्टिंग समिति की बैठक	12 जून, 2019
औषधियों के विवेकपूर्ण प्रयोग हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	13 जून, 2019
ओडिशा के उच्च स्थानिक जिलों में मलेरिया वेक्टर की बायोनॉमिक्स और बृहत वेक्टर मैपिंग पर बहुकेन्द्रीय टास्फ फोर्स अध्ययनों की अंतिम रिपोर्ट्स की समीक्षा हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	13 जून, 2019
डेंगी/चिकुनगुनिया के नियंत्रण हेतु वोलवाकिया आधारित नीतियों पर आई सी एम आर की गतिविधियों की समीक्षा हेतु तकनीकी समीक्षा समूह की बैठक	14 जून, 2019
पॉलीसिस्टिक ओवरी सिण्ड्रोम पर आई सी एम आर टास्क फोर्स अध्ययन हेतु अनुसंधानकर्ताओं की बैठक	14 जून, 2019
राष्ट्रीय सहायक प्रौद्योगिकी केन्द्र हेतु बैठक	14 जून, 2019
औषधीय पादप प्रभाग (एम पी डी) के वैज्ञानिक सलाहकार समूह की बैठक	14 जून, 2019

मलेरिया और वयस्क ज्वरजन्य रोग संबद्ध मर्त्यता के कार्यकारी समूह पर आई सी एम आर–सेंटर फॉर ग्लोबल हेल्थ रिसर्च (सी जी एच आर) बैठक	17 जून, 2019
रुमेटी हृदयरोग ग्रस्त रोगियों में डाइगॉक्सिन पर एक यादृच्छिक प्लेसिबो कंट्रोल्ड परीक्षण पर बैठक	17 जून, 2019
आन्तरिक सूचना प्रौद्योगिकी (IT) विशेषज्ञ समिति की बैठक	18 जून, 2019
ऑर्थोपेडिक्स पर स्टैण्डर्ड ट्रीटमेंट वर्कफ्लो	18 जून, 2019
रोगनिवारण (POD) के अन्तर्गत वैक्सीन परीक्षण के यादृच्छीकरण हेतु चिकित्साधिकारियों, फार्मेसिस्ट के लिए हैण्ड्स ऑन प्रशिक्षण	20 जून, 2019
असंचारी रोग प्रभाग/रिसर्च मेथडोलॉजी सेल के अन्तर्गत परियोजना संचालन समिति की बैठक	20 जून, 2019
कोशिकीय एवं आण्विक जैविकी तथा जीनोमिक्स पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	24 जून, 2019
मूत्ररोगविज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (NHA) के साथ परामर्श बैठक	24 जून, 2019
आई एस आर एम प्रभाग के अंतर्गत एच आई वी–प्रभावित होने से पूर्व रोगनिरोध पर बैठक	24 जून, 2019
पूर्वोत्तर क्षेत्र में विषाणुज यकृतशोथ परियोजना पर मुख्य अनुसंधानकर्ताओं की बैठक	24 एवं 25, 2019
आर बी एम सी एच प्रभाग के अन्तर्गत टास्क फोर्स अध्ययन पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	25 जून, 2019
संचार समूह की बैठक	26 जून, 2019
राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (NHA) के साथ स्टैण्डर्ड ट्रीटमेंट वर्कफ्लो हेतु विशेषज्ञ समूह की परामर्शक बैठक	26 जून, 2019
जनन पथ संक्रमण संबद्ध ट्रामा सुरक्षा पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स के मुख्य अनुसंधानकर्ताओं की बैठक	26 जून, 2019

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

नोएडा स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय कैंसर निवारण एवं अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रो. रवि मेहरोत्रा ने बैंकॉक, थाईलैण्ड में सम्पन्न विश्व स्वास्थ्य संगठन–FCTC नॉलेज हब के प्रबंधकों की बैठक में भाग लिया (13–14 मई, 2019)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान की निदेशक एवं वैज्ञानिक 'जी' डॉ शान्ता दत्ता ने वेरिये ड्यु लैक, फ्रांस में (1) हैज़ा नियंत्रण पर विश्व स्वास्थ्य संगठन वैश्विक टास्क फोर्स की छठी वार्षिक बैठक तथा (2) हैज़ा अनुसंधान एवं व्यवहार पर सम्पन्न बैठक में भाग लिया (3–5 जून, 2019)।

बैंगलुरू स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय रोग सूचनाविज्ञान एवं अनुसंधान केन्द्र की वैज्ञानिक 'डी' डॉ मीशा चतुर्वेदी और वैज्ञानिक 'सी' डॉ शकुन्तला टी. एस. ने वैंकूवर, कनाडा में सम्पन्न ''NAACCR-IACR संयुक्त वार्षिक सम्मेलन 2019'' में भाग लिया (9–13 जून, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'डी' डॉ विनीता सिंह ने कुआला लम्पूर, मलेशिया में दो सप्ताह की अवधि तक ASEAN- भारत सहयोगी शोध परियोजना पर कार्य करने हेतु प्रमुख अनुसंधानकर्ता के रूप में भाग लिया (10 जून, 2019 से आरंभ)।

पुणे स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' शैलेश डी. पवार ने जेनेवा, ''स्विट्ज़रलैण्ड में सम्पन्न ''तदर्थ लघुकालिक कार्यकारी समूह'' की बैठक में भाग लिया (11–13 जून, 2019)।

अहमदाबाद स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अमित चक्रवर्ती ने सैन एंटोनियो, टेक्सास, सं रा अ में सम्पन्न (1) संयुक्त NIDA अंतर्राष्ट्रीय फोरम एवं PDD कार्यशाला; तथा 21 CPDD की 81वीं वार्षिक वैज्ञानिक बैठक में भाग लिया। (14–19 जून, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' डॉ जे. डब्ल्यू. विवियन ने सिडनी, आस्ट्रेलिया में सम्पन्न ग्लोबल हेल्थ सेक्युरिटी सम्मेलन (GHS 2019) में भाग लिया (18–20 जून, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ रुचि सिंह ने एथेंस, ग्रीस में सम्पन्न ''पी के डी एल कंशोर्शियम'' की बैठक में भाग लिया (19–21 जून, 2019)।

पटना स्थित आई सी एम आर–राजेन्द्र स्मारक आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ वी. एन. आर. दास ने एथेंस, ग्रीस में सम्पन्न'' पोस्ट कालाज़ार डर्मल लीशमानिएसिस (PKDL) कंशोर्शियम'' की बैठक में भाग लिया (19–21 जून, 2019)।

मुम्बई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ वैनव पटेल ने विएना, आस्ट्रिया में सम्पन्न ''यूरोपीय मानव प्रजनन एवं एम्ब्रियोलॉजी सोसाइटी की 35वीं वार्षिक बैठक'' में भाग लिया (23–26 जून, 2019)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान की निदेशक एवं वैज्ञानिक 'जी' डॉ शान्ता दत्ता ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में हैज़ा एवं रोगवाहक जन्य रोगों के लिए पूर्वानुमान हेतु मौसम सूचना के प्रयोग पर'' विशेषज्ञ बैठक में भाग लिया (25–26 जून, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अनुप कुमार अन्विकर ने पास्चर संस्थान, पेरिस, फ्रांस में ''वाइवैक्स पीड़ित रोगी के चिकित्सा प्रबंध हेतु नवीन साधनों के लिए अवसर तथा चुनौतियों पर स्टेकहोल्डर्स का बैठक, तथा *प्लाज़्मोडियम वाइवैक्स* अनुसंधान पर 7वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया (25–28 जून, 2019)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ सान्तासबुज दास ने पेरिस, फ्रांस में ''*प्लाज़्मोडियम वाइवैक्स* अनुसंधान पर 7वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICPvR) तथा PATH सहयोगी परियोजनाओं के अनुसंधानकर्ताओं की बैठक में भाग लिया (25–28 जून, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' द्वय डॉ अभिनव सिन्हा एवं डॉ एलेक्स इयापेन तथा वैज्ञानिक 'डी' डॉ दीपाली अन्विकर ने पास्चर संस्थान, पेरिस, फ्रांस में सम्पन्न *प्लाज़्मोडियम वाइवैक्स* अनुसंधान पर 7वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया (26–28 जून, 2019)।

जबलपुर स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ अपरुप दास ने पेरिस, फ्रांस में सम्पन्न "*प्लाज़्मोडियम वाइवैक्स* अनुसंधान पर 7वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन" में भाग लिया (26–28 जून, 2019)।

नोएडा स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय कैंसर निवारण एवं अनुसंधान संस्थान के निदेशक (पुनर्नियुक्त) डॉ रवि मेहरोत्रा ने ट्रोविसो, इटली में सम्पन्न ''जराविद्या संबद्ध अर्बुदविज्ञान में SIOG 2019 उन्नत पाठ्यक्रम' में भाग लिया (26–29 जून, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के कुछ प्रकाशन

औषधीय पादपों (*मेडिसिनल प्लांट्स*) पर पुस्तकें

				रुपए
मेडिसिनल प्लान्ट्स ऑफ इंडिया, खण्ड 2 (1987)				136.00
रिव्यूज़ ऑन इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स				
खण्ड	1	(2004)	(Abe-Alle)	620.00
खण्ड	2	(2004)	(Alli-Ard)	620.00
खण्ड	3	(2004)	(Are-Azi)	620.00
खण्ड	4	(2004)	(Ba-By)	620.00
खण्ड	5	(2007)	(Ca-Ce)	900.00
खण्ड	6	(2008)	(Ch-Ci)	900.00
खण्ड	7	(2008)	(Cl-Co)	1000.00

खण्ड	8	(2009)	(Cr-Cy)	1560.00
खण्ड	9	(2009)	(Da-Dy)	1000.00
खण्ड	10	(2011)	(Ec-Ex)	2190.00
खण्ड	11	(2013)	(Fa-Gy)	2372.00
खण्ड	12	(2013)	(Ha-Hy)	1878.00
खण्ड	13	(2013)	(Ib-Ky)	1380.00
खण्ड	14	(2015)	(La-Ly)	1450.00
खण्ड	15	(2016)	(Ma-Me)	1620.00
खण्ड	16	(2017)	(Mi-My)	1700.00
खण्ड	17	(2017)	(Na-Ny)	1700.00
खण्ड	18	(2018)	(Oc-Ox)	1800.00
खण्ड	19	(2019)	(Pa-Phl)	2950.00
खण्ड	20	(2019)	(Pho-Pip)	2950.00

क्वालिटी स्टैण्ड्र्डस ऑफ इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स

		रुपए
खण्ड 1	2003	600.00
खण्ड 2	2005	600.00
खण्ड 3	2005	890.00
खण्ड 4	2006	700.00
खण्ड 5	2008	500.00
खण्ड 6	2008	600.00
खण्ड 7	2008	600.00
खण्ड 8	2010	1600.00
खण्ड 9	2011	1792.00
खण्ड 10	2012	1860.00
खण्ड 11	2013	2140.00
खण्ड 12	2014	1912.00
खण्ड 13	2015	1730.00
खण्ड 14	2017	1580.00
खण्ड 15	2017	1800.00
खण्ड 16	2018	1450.00

औषधीय पादपों पर अन्य पुस्तकें

		रुपए
1.	फाइटोकेमिकल रेफरेंस स्टैण्डर्ड्स ऑफ सेलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स खण्ड 1 (2010)	1574.00

2.	फाइटोकेमिकल रेफरेंस स्टैण्डड्र्स ऑफ सेलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्र्स खण्ड 2 (2010)	1524.00
3.	फाइटोकेमिकल रेफरेंस स्टैण्डड्र्स ऑफ सेलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स खण्ड 3 (2016)	1400.00
4.	फाइटोकेमिकल रेफरेंस स्टैण्डड्र्स ऑफ सेलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स खण्ड 4 (2016)	1750.00
5.	पर्सपेक्टिव ऑफ इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स इन दि मैनेजमेंट ऑफ लीवर डिसऑर्डर्स (2008)	500.00
6.	पर्सपेक्टिव ऑफ इंडियन मेडिसिन प्लांट्स इन दि मैनेजमेंट ऑफ लिम्फैटिक फाइलेरियासिस (2012)	1920.00
7.	पर्सपेक्टिव ऑफ इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स इन दि मैनेजमेंट ऑफ डायबिटीज़ मेलिटस (2014)	1700.00
8.	सेफ्टी रिव्यूज़ ऑन सलेक्टिड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स खण्ड 1 (2018)	1600.00

औषधीय पादपों से संबंधित पुस्तकें 40 प्रतिशत छूट पर उपलब्ध हैं। डाक व्यय अतिरिक्त होगा।

अन्य

रेग्युलेटरी रिक्वायरमेंट्स फॉर ड्रग डेवलपमेंट ऐण्ड क्लीनिकल रिसर्च (2013)	700.00

नियतकालिक प्रकाशन (पीरियाडिकल)

***दि इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* (आई जे एम आर) (मासिक)**

वार्षिक ग्राहकों के लिए मूल्य 4000/– रुपए, प्रति कॉपी मूल्य 400/–रुपए

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेबसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। डाक व्यय अलग होगा। चेक अथवा मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।
दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228),
फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in
सम्पर्क व्यक्ति : डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना

'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in और www.ijmr.org.in पर उपलब्ध है

'आई सी एम आर पत्रिका' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in *पर भी उपलब्ध है*

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा, श्रीमती सरिता नेगी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87